हे प्रभो! यह तेरापंथ

विज्ञप्ति

एक प्रति - 10 रु.
एक वर्ष - 300 रु.
पन्द्रह वर्ष - 3100 रु.

तेरापंथ की केन्द्रीय गतिविधियों का सर्वाधिक लोकप्रिय साप्ताहिक मुखपत्र

विज्ञप्ति (साप्ताहिक) वर्ष 30 : अंक 7 : दिल्ली : 3 - 9 मई 2024

युगप्रधान महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण महाराष्ट्र में

सुप्रसिद्ध जैनाचार्य के शुभागमन से आह्लादित हुए आष्टीवासी

१६ अप्रेल। परम पावन आचार्यप्रवर ने प्रातः कड़ा से आष्टी के लिए प्रस्थान किया। संबंधित लोगों के निवेदन पर पूज्यप्रवर गत कल के प्रवास स्थल के सामने की ओर स्थित श्री अमोलक जैन विद्या प्रसारक मण्डल के कार्यालय में पधारे एवं मंगलपाठ उच्चरित किया। संबद्ध लोगों ने पूज्यप्रवर का स्वागत करते हुए संस्थान के विषय में अवगति भी प्रस्तुत की। श्री अमोलक जैन विद्या प्रसारक मण्डल के अंतर्गत निर्मीयमाण फॉर्मेसी कॉलेज की इमारत दूर से पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बनी। लोगों ने इस विषय में जानकारी प्रस्तुत की तो पूज्यप्रवर ने मार्ग पर ही मंगलपाठ उच्चरित किया।

आज के विहार पथ का काफी हिस्सा ऊबड-खाबड़ और पथरीला था। आचार्यप्रवर उस मार्ग पर भी समत्व के साथ गतिमान रहे। आचार्यप्रवर के स्वागत में आष्टी जैन समाज के लोग हर्षोल्लास के साथ उपस्थित थे। पूज्यप्रवर उनके निकट पधारे तो उन्होंने श्रीचरणों में अपनी प्रणति अर्पित कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। स्थानीय विधायक श्री बाल साहेब आजवे के पुत्र श्री यश भी आचार्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित बने।

स्थानकवासी श्रमण संघ की साध्वी नमिताश्रीजी और साध्वी सजगश्रीजी ने भी पूज्यप्रवर की सादर अगवानी की। पूज्यप्रवर करीब १२.८ कि.मी. का विहार कर आष्टी में स्थित पंडित जवाहरलाल नेहरु प्राथमिक-माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ। पूज्यप्रवर के प्रवास कक्ष में पधारने के उपरान्त स्थानकवासी साध्वी नमिताश्रीजी और साध्वी सजगश्रीजी ने पूज्यप्रवर को अपनी विधि अनुसार तीन बार वंदन किया। वे बोलीं- 'तेरापंथ धर्मसंघ में जो एक आचार्य के अनुशासन की व्यवस्था है, उसकी हम सराहना करते हैं। हम तो यही कामना करते हैं कि ऐसा अनुशासन हमारे संघ में भी आए।'

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने मंगल प्रवचन में शांति प्राप्ति में बाधक तत्त्वों की चर्चा करते हुए उनसे बचने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा- 'आज आष्टी में आना हुआ है। यहां जैन समाज के लोग भी हैं। स्थानकवासी परंपरा की दो साध्वीजी भी पहुंची हैं। आध्यात्मिक साधना खूब आगे बढ़ती रहे। आष्टी के लोगों में खूब धार्मिक जागरणा रहे। ब्रह्माकुमारी बहनें भी उपस्थित हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में खूब विकास होता रहे।'

सायंकाल परमाराध्य आचार्यप्रवर आष्टी के बी.डी. हम्बर्डे महाविद्यालय की ओर प्रस्थित हुए। मार्ग में स्थानकवासी साध्वियों ने पूज्यप्रवर को वंदन किया। आष्टी जैन समाज के लोगों की प्रार्थना पर पूज्यप्रवर कुछ अतिरिक्त दूरी तय करते हुए आष्टी के बाजार से होते हुए पधारे। आचार्यप्रवर के इस अनुग्रह में अभिस्नात लोग हर्षविभोर थे। मार्ग में कई लोगों ने अपने-अपने घर, व्यावसायिक प्रतिष्ठान के निकट आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। गहनीनाथ मोहले नामक एक ग्रामीण पूज्यप्रवर को भेंट करने के लिए कई केरियां लेकर आया। उसे समझाकर रोका गया। आचार्यप्रवर ने उसे पावन आशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर करीब ३ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर आष्टी में ही स्थित बी.डी. हम्बर्डे महाविद्यालय में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ। संस्थान के अध्यक्ष श्री किशोर नाना हम्बर्डे, सचिव श्री अतुल मेयर, प्रिंसिपल श्री सोपानराव निबोरे ने आचार्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

२० अप्रेल। परम श्रद्धास्पद आचार्यप्रवर ने प्रातः आष्टी से चिंचपुर के लिए प्रस्थान किया। आष्टी जैन समाज के लोग अच्छी संख्या में पहुंचाने के लिए काफी दूर तक साथ चले। कुकरी के ग्रामीणों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर शुभ आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर करीब ११ कि.मी. का विहार कर चिंचपुर में स्थित जिला परिषद पाठशाला में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री मारुति पहाड़े आदि ने पूज्यप्रवर का भक्तिभरा स्वागत किया।

परम पूज्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में कर्त्तव्यनिष्ठा व निरवद्य कर्त्तव्य के प्रति सजग रहने की प्रेरणा प्रदान की।

स्थानीय सरपंच श्री संतोष धवले ने कहा- 'मैं परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का चिंचपुर की जनता की ओर से हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं। आप यहां आए, यह हमारे लिए परम सौभाग्य की बात है।'

महाश्रमण और महावीरमय हुआ जामखेड़ : महावीर जयंती पर जैन एकता का जीवंत उदाहरण

२१ अप्रेल। चैत्र शुक्ला त्रयोदशी। जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का २६२३वां जन्म कल्याणक दिवस। जैन शासन में उल्लासमय वातावरण। जामखेड़ के जैन समाज में आज अतिरिक्त प्रसन्नता का वातावरण दिखाई दे रहा था। ऐसा स्वाभाविक भी था, क्योंकि भगवान महावीर की जन्म जयंती के दिन उन्हें भगवान महावीर के प्रतिनिधि सुप्रसिद्ध जैनाचार्यप्रवर की साक्षात सन्निधि जो प्राप्त हो रही थी। जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के किसी भी आचार्यप्रवर के प्रथम पदार्पण का प्रसंग स्थानीय स्थानकवासी समाज के हर्षोल्लास को वृद्धिंगत बनाए हुए था। जामखेड़ में एक भी तेरापंथी परिवार निवासित नहीं है, यह जानने के बाद स्थानीय जनता की पूज्यप्रवर के प्रति भक्ति एवं स्वागत में बड़ी संख्या में उपस्थिति नवागंतुकों को चकित कर रही थी। जामखेड़ के लोग कई दिनों से आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ व व्यवस्थाओं के संदर्भ में मार्गदर्शन प्राप्त करने हेतु पूज्य सन्निधि में पहुंच रहे थे। लोगों में आचार्यप्रवर के व्यक्तित्व का प्रभाव स्पष्ट जानने को मिल रहा था।

आज जामखेड़वासी पूज्यप्रवर की अगवानी में बड़ी संख्या में उपस्थित थे। जगह-जगह लगे बड़े-बड़े बैनर, लहराते जैन ध्वज, भक्तिमान लोगों की समूहबद्ध उपस्थिति, उनके खिले हुए चेहरे, नई और एकरूप वेश-भूषा, साफे बांधे हुए किशोर, 'जय जय ज्योतिचरण, जय जय महाश्रमण', 'नेमाजी रे लाल नै, घणी-घणी खम्मा' के गूंजते निनाद विहार पथ को महाश्रमणमय बनाए हुए थे। तेरापंथ धर्मसंघ के आचार्यप्रवर का स्थानकवासी समाज द्वारा इस प्रकार स्वागत करना महावीर जयंती के दिन जैन एकता का जीवंत उदाहरण बना हुआ था। यत्र-तत्र स्थानीय लोग पूज्यप्रवर को वंदन कर पावन शुभाशीर्वाद प्राप्त कर रहे थे। पूज्यप्रवर लगभग ५.३ कि.मी. का विहार कर जामखेड़ में स्थित एल.एन. होशिंग माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। विद्यालय के मुख्याध्यापक श्री श्रीकांत बालकृष्ण होशिंग आदि ने पूज्यप्रवर का भावपूर्ण स्वागत किया।

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में कहा- 'आज चैत्र शुक्ला त्रयोदशी है। परमात्मा, परम वंदनीय, परम स्तवनीय, परम श्रद्धेय, परम आराध्य भगवान महावीर के जन्म कल्याणक दिवस का प्रसंग है। आज से २६२२ वर्ष पूर्व एक शिशु का त्रिशला की कुक्षि से प्राकट्य हुआ था। भगवान महावीर का जन्म ईसा पूर्व ५९९ और विक्रम पूर्व ५४२ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हुआ था। वर्तमान में भगवान महावीर के २५५०वें निर्वाण वर्ष का भी उपलक्ष है।

आज भगवान महावीर तो हमारे सामने सदेह रूप में नहीं हैं, परन्तु जैन आगम हमारे पास उपलब्ध हैं। अनेक ग्रंथ हमें प्राप्त हैं, अनेक संत भी हमें प्राप्त हैं, जैन शासन में अनेक पंथ भी विद्यमान हैं। जैन शासन में उपलब्ध ग्रंथों से कितना ज्ञान ग्रहण किया जा सकता है। संतों के उपदेश से सन्मति प्राप्त की जा सकती है।'

पूज्यप्रवर ने आगे कहा- 'आदमी का दृष्टिकोण अनेकांतवादी रहना चाहिए कि किस अपेक्षा से क्या बात कही गई है। दृष्टिकोण दुराग्रही नहीं रहना चाहिए, उसमें अनाग्रह रहना चाहिए। अनेकांतवाद के संदर्भ में अनेक चीजों को व्याख्यायित किया जा सकता है।

जैनिज्म का एक सिद्धांत है- आत्मवाद। आत्मा स्थायी है, उसे कोई मार नहीं सकता, काट नहीं सकता। जैन दर्शन में कर्मवाद भी है। कर्मवाद के संदर्भ में एक-एक व्यक्ति के व्यक्तित्व और कर्तृत्व को विश्लेषित किया जा सकता है। जैनिज्म में पुनर्जन्मवाद भी एक सिद्धांत है। संसारी अवस्था में एक जन्म के बाद दूसरा जन्म भी होता है। कर्मवाद और पुनर्जन्मवाद आत्मा से जुड़े हुए सिद्धांत हैं।

आज भगवान महावीर की जन्म जयंती है और पच्चीस सौ पचासवें निर्वाण वर्ष का भी उपलक्ष है। जामखेड़ में तो हम जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ की ही चारित्रात्माएं हैं, अन्य संप्रदाय के तो कोई हैं अथवा नहीं। बड़े शहरों में तो आज के प्रसंग में कई बार अनेक संप्रदायों के साथ में बैठते हैं, कार्यक्रम में साथ में सहभागी बनते हैं।

जैन शासन में भगवान महावीर के नाम में तो किस बात का मतभेद है। वस्त्र, मुखवस्त्रिका, मूर्तिपूजा आदि में तो मतभेद हो सकता है, किन्तु भगवान महावीर तो हम सबके हैं। उसमें मानों हमारी एकता है। हमारी एकता को प्रकट करने में महावीर जयंती का दिन भी निमित्त हो सकता है।

जामखेड़ में कोई तेरापंथी परिवार तो है अथवा नहीं, अन्य जैन परिवार हैं और यहां भी कार्यक्रम हो रहा है। यहां के जैन समाज के लोग कब से हमारे संपर्क में आ रहे थे, जुलूस, कार्यक्रम आदि सारी व्यवस्थाओं पर ध्यान दे रहे थे। इसे भी एक संदर्भ में जैन शासन की एकता कहा जा सकता है। जैन शासन में समुचित रूप में मैत्री व सौहार्द का भाव बना रहे। परंपरा में मतभेद हो सकते हैं, मान्यताएं अलग-अलग हो सकती हैं, किन्तु जहां महावीर का नाम है, अहिंसा आदि की बात है, वहां हम एक भी रह सकते हैं।

जैन समाज के बच्चों को विद्यालय के साथ-साथ ज्ञानशाला, पाठशाला आदि के माध्यम से अच्छा धार्मिक प्रशिक्षण भी प्राप्त होता रहे। बच्चों में अच्छे संस्कार रहें। वे ड्रग्स आदि के नशे के प्रभाव में न जाएं। नॉनवेज से भी बचाव रहे। होटल में रहना हो या हॉस्टल में या हॉस्पिटल में, नॉनवेज से बचने का लक्ष्य रहना चाहिए। नॉनवेज और वेज को हिंसा-अहिंसा की दृष्टि से भी विश्लेषित किया जा सकता है, भक्ष्य और अभक्ष्य की दृष्टि से भी उन पर विचारणा हो सकता है, स्वास्थ्य और अस्वास्थ्य के संदर्भ में भी वह चर्चा का विषय हो सकता है। इन सबमें मुख्य बात है- हिंसा और अहिंसा। जैन समाज के लोगों में नशामुक्ति का और नॉनवेज से बचने का मनोभाव पुष्ट रहे।

जैन हैं तो यह भी ध्यातव्य है कि नमस्कार महामंत्र का जप होता है या नहीं। जैन होने का एक लक्षण है- नमस्कार महामंत्र का जप। जैन समाज के बच्चों व अन्य लोगों में नमस्कार महामंत्र के जप का संस्कार भी रहना चाहिए।

किसी भी संप्रदाय में रहें, अध्यात्म और अकषाय का भाव रहना चाहिए। कोई किसी भी वेश में रहा हो, किसी भी देश में रहा हो, अकषाय और केवलज्ञान हो जाने के बाद सारी बातें गौण हो जाती हैं। उसके लिए इस जीवन के बाद मोक्ष का दरवाजा खुल जाता है। मुक्ति का मुख्य आधार बन सकता है- कषाय मुक्ति।

परम प्रभु महावीर इस भरत क्षेत्र की इस अवसर्पिणी के चौबीसवें तीर्थंकर हुए। वे परमात्म पद को प्राप्त हो गए। उनका जीवनकाल साधिक बहत्तर वर्ष का रहा। उन्हें ज्यादा लम्बा जीवनकाल नहीं मिला। ज्यादा बड़ा जीवनकाल न होने पर भी थोड़े समय में ज्यादा महत्त्वपूर्ण कार्य कर लिया जाए तो आदमी स्मरणीय बन सकता है, अनुसरणीय बन सकता है, श्रद्धेय बन सकता है। आज हम परम प्रभु, परम श्रद्धेय भगवान महावीर का जन्म कल्याणक दिवस मना रहे हैं। महावीर जयंती के प्रति लोगों में आकर्षण भी देखने को मिलता है। भगवान महावीर ने ध्यान की साधना भी की थी। हम भी कुछ समय तक ध्यान की साधना करें।'

पूज्यप्रवर ने कुछ पल ध्यान का प्रयोग कराया। आचार्यप्रवर ने गुरुदेव श्री तुलसी और स्थानकवासी आचार्यश्री आनंदऋषिजी के मिलन के प्रसंग का भी उल्लेख किया।

पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा- 'आज जामखेड़ में हमारा आना हुआ है। यहां के लोगों में धर्म की अच्छी भावना और अच्छे संस्कार बने रहें। महावीर जयंती से हमें अध्यात्म, धर्म, अहिंसा, संयम और तप की प्रेरणा

प्राप्त हो, हम आत्मोत्थान की दिशा में आगे बढ़ते रहें, दूसरों की भी यथासंभव आध्यात्मिक-धार्मिक सेवा करने का प्रयास करते रहें।'

कार्यक्रम में साध्वीवर्याजी ने अनेकांतवाद व मुख्यमुनिश्री ने कर्मवाद का विवेचन करते हुए जनता को उद्‌बोधित किया। पूज्यप्रवर के निर्देश पर मुनि कुमारश्रमणजी व मुनि योगेशकुमारजी ने भी महावीर जयंती के संदर्भ में अपने विचार व्यक्त किए।

स्थानीय आनंद जैन पाठशाला के बच्चों ने अपनी प्रस्तुतियां दीं। गुरु गणेश मण्डल, आनंद चालीसा ग्रुप, बीड तेरापंथ महिला मण्डल व छत्रपति संभाजीनगर (औरंगाबाद) तेरापंथ महिला मण्डल ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-जामखेड़ के अध्यक्ष श्री दिलीप भाऊ गुगळे, लोकशाह पत्रिका के संपादक श्री विजयराज बंब, श्री कुंदनमल भंडारी, श्री आकाश बाफना व श्री आसराज बोथरा ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

स्थानीय आमदार श्री रामजी शिंदे ने कहा- 'भगवान महावीर के जन्मदिन के अवसर पर मैं भगवान महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी का जामखेड़ की धरती पर हार्दिक स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं। इतने साधु-साध्वियों के साथ आपका यहां आगमन और आपकी सन्निधि में भगवान महावीर की जन्म जयंती का आयोजन हमारे शहर के लिए परम सौभाग्य की बात है। आपने सद्‌भावना, नैतिकता व नशामुक्ति जैसे संदेशों को लेकर देश-विदेश की पदयात्रा के साथ ही पचपन हजार किलोमीटर से अधिक की पदयात्रा कर ली है। मैं ऐसे महासंत के चरणों में पुनः प्रणाम करता हूं।'

राष्ट्रवादी कांग्रेस के तालुकाध्यक्ष श्री मधुकर राळेभात ने कहा- 'भगवान महावीर की जयंती पर हमारे यहां पधारे आचार्यश्री महाश्रमणजी का हार्दिक स्वागत करता हूं। यह जामखेड़ शहर का सौभाग्य है कि युगप्रधान आचार्यजी का यहां मंगल पदार्पण हुआ है। भगवान महावीर के संदेशों को हम तक पहुंचाने के लिए आप यहां पधारे हैं। मैं आधुनिक महावीर के रूप में आचार्यश्री महाश्रमणजी को वंदन करता हूं।'

जामखेड़ महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. माणिक डोंगरे ने कहा- 'भगवान महावीर के जन्म जयंती के अवसर पर शांतिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी के चरणों के वंदन का अवसर प्राप्त होना हम सभी के लिए परम सौभाग्य की बात है। आपके आगमन से पूरा जामखेड़ शहर पवित्र हो गया है। महाविद्यालय में ऐसे सुन्दर कार्यक्रम का आयोजन भी सौभाग्य की बात है। मैं हमारे महाविद्यालय परिवार की ओर से आपका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं।'

२२ अप्रेल। परम पूज्य आचार्यप्रवर प्रातः जामखेड़ से साकत की ओर प्रस्थित हुए। जामखेड़ के कई लोगों ने अपने-अपने घर, कार्यालय, व्यावसायिक प्रतिष्ठान आदि के निकट आचार्यप्रवर के दर्शन कर श्रीमुख से मंगलपाठ सुनने का सौभाग्य प्राप्त किया। सम्मुखीन सूर्य आतप बरसा रहा था, किन्तु हवा उसके आतप पर नियंत्रण बनाए हुए थी। आसपास के क्षेत्र में लगीं पवनचक्कियां इस क्षेत्र में हवा की प्रचुरता की द्योतक थीं। गंतव्य से करीब दो कि.मी. पूर्व घाट प्रारम्भ हुआ। पर्वतों को काटकर बनाया गया यह घुमावदार घाट रूप पथ ज्यादा लम्बा नहीं था, किन्तु इसकी ऊंचाई पावों को अतिरिक्त शक्ति लगाने को मजबूर कर रही थी। पूज्यप्रवर करीब १०.५ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर साकत में स्थित इन्द्रा नर्सिंग कॉलेज में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान परम पूज्य आचार्यप्रवर ने अपने पावन प्रवचन में भक्ति के महत्त्व पर प्रकाश डाला। पूज्यप्रवर ने चतुर्दशी के प्रसंग में हाजरी का क्रम संपादित करते हुए उपस्थित साधु-साध्वियों को पावन प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश तेरापंथ धर्मसंघ की विशेषताओं, अष्टगणी संपदाओं आदि का भी वर्णन किया। पूज्यप्रवर के आह्‌वान पर कई संतों ने अपनी जिज्ञासाएं आचार्यप्रवर के सम्मुख प्रस्तुत कीं। पूज्यप्रवर ने उनके उत्तर प्रदान किए। साधु-साध्वियों ने अपने-अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र उच्चरित किया।

पूज्यचरणों से पावन हुआ पाटोदा, जैन समाज द्वारा भक्तियुक्त स्वागत

२३ अप्रेल। आज सूर्योदय के कुछ समय पश्चात हल्की बूंदाबांदी प्रारम्भ हो गई, जो विहार के प्रारम्भ में कुछ विलम्ब का कारण बनी। वर्षा रुकने की सूचना मिलने के उपरान्त परम पावन आचार्यप्रवर साकत से पाटोदा के लिए प्रस्थित हुए। विहार के प्रारम्भिक भाग में बूंदाबांदी यदा-कदा होती व थमती रही। तदुपरान्त सूर्य ने अपनी तेजस्विता के साथ वातावरण पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। साकत गांव के लोग पूज्यप्रवर के दर्शन और पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। मार्ग के परिपार्श्व में एक टैंकर से पानी भरते लोग इस बात के द्योतक थे कि इस क्षेत्र के लोग पेयजल की किल्लत का सामना कर रहे हैं। आज का विहार पथ जगह-जगह ऊबड़-खाबड़ और पथरीले रूप में था। इस मार्ग पर जब कोई वाहन निकल रहा था तो वातावरण में धूल का गुबार-सा छा रहा था। विहार मार्ग की प्रतिकूलता के बावजूद पूज्यचरण मंजिल की ओर अस्खलित गति से बढ़ते जा रहे थे। पूज्यप्रवर के स्वागत में पाटोदावासी बड़ी संख्या में सोल्लास उपस्थित थे। पूज्यप्रवर उनके निकट पधारे तो उन्होंने सविनय वंदन कर श्रीचरणों में अपने भावसुमन अर्पित किए।

स्थानीय नगर अध्यक्ष श्री राज जाधव, नगर सेवक श्री आसेफ सौदागर आदि ने अपने शहर में आचार्यप्रवर का भावभीना स्वागत किया। संबंधित लोगों के निवेदन को स्वीकार कर पूज्यप्रवर मार्ग के करीब दो सौ मीटर भीतर स्थित स्थानक में पधारे और वहां मंगलपाठ उच्चरित किया।

पूज्यप्रवर के पदार्पण से पाटोदा का स्थानकवासी समाज अतिशय हर्षविभोर था। लोगों का उत्साह इस बात का अहसास ही नहीं होने दे रहा था कि यहां एक भी तेरापंथी परिवार निवासित नहीं है। पूज्यप्रवर शहर के मुख्य मार्ग पर गतिमान थे। इस मार्ग के हर खम्बे पर स्थानीय श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ की ओर से आचार्यप्रवर के स्वागत और यात्रा से संबंधित ऊंचे-ऊंचे बैनर तथा जैन ध्वज लगे हुए थे। बुलंद जयघोषों में स्थानीय लोगों की पूज्यप्रवर के प्रति भक्ति मुखर बनी हुई थी। पूज्यप्रवर करीब १२.६ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर पाटोदा में स्थित कला एवं विज्ञान महाविद्यालय में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ। प्रिंसिपल डॉ. विश्वास कदम्बा आदि ने पूज्यप्रवर का आस्थासिक्त स्वागत किया। हरि भक्त परायण रन्हवे महाराज पूज्यप्रवर को वंदन कर मराठी भाषा में बोले- 'आम्ही भाग्यवान, तुमचे दर्शन झाला।'

परमाराध्य आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में सद्गुणभूषणों की चर्चा करते हुए उन्हें धारण करने की प्रेरणा प्रदान की। पूज्यप्रवर ने प्रसंगवश कहा- 'आज पाटोदा में आना हुआ है। यहां जैन समाज से जुड़े हुए लोग भी हैं। हमारा स्थानक में भी जाना हुआ। अन्य जैन समाज के लोग भी तेरापंथ संप्रदाय के प्रति आदर-सम्मान की अभिव्यक्ति दे रहे हैं, यह महत्त्वपूर्ण बात है। यहां का जैन समाज आध्यात्मिक-धार्मिक उन्नति करता रहे। अन्य लोग भी अपने जीवन में सद्गुणों को बढ़ाने का प्रयास करते रहें। शिक्षा संस्थान में बच्चों को अच्छे संस्कार देने का प्रयास चलता रहे। इस शिक्षा संस्थान का भी अच्छा आध्यात्मिक-धार्मिक उन्नयन होता रहे। मंगलकामना।'

कार्यक्रम में श्रीमती सुषमा कांकरिया, श्री संजय कांकरिया, श्री गणेश कवड़े, श्रीमती सत्यभामा ताई डांगर, कॉलेज के प्रिंसिपल डॉ. विश्वास कदम, श्री अप्पा साहब राखव व श्रीमती सुरेश ताई ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। श्रीमती चंदनबाला कांकरिया व श्री समकित कांकरिया तथा संस्कृति श्राविका मण्डल ने पृथक्-पृथक् गीत का संगान किया। स्थानीय जैन समाज की कन्याओं ने अपनी प्रस्तुति दी।

पाटोदा नगर अध्यक्ष श्री राजू जाधव ने कहा- 'आज पाटोदा नगरी में अपनी अहिंसा यात्रा लेकर पधारे आचार्यश्री महाश्रमणजी का मैं स्वयं और अपनी नगर की जनता की ओर से हार्दिक स्वागत करता हूं। यह मेरा परम भाग्य है कि मुझे आपके दर्शन और मंगल प्रवचन को सुनने का मौका मिला है। हम आपकी प्रेरणाओं पर चलने का प्रयास करेंगे।'

आज दिन में सूर्य और बादलों के बीच आंख-मिचौली का खेल-सा चलता रहा। कभी सूर्य बादलों को चीरकर आतप बरसा रहा था तो कभी बादल उसे आच्छादित कर गर्मी को नियंत्रित कर रहे थे। सायंकाल तेज हवा के साथ बादल आसमान में छा गए और कुछ समय में वर्षा प्रारम्भ हो गई, जो कभी मंद तो कभी हल्की तेज रूप में काफी समय तक बरसती रही। वर्षा के कारण वातावरण में शीतलता व्याप्त हो गई।

विषम मार्ग पर गतिमान हुए समत्वलीन गुरुवर

२४ अप्रेल। सूर्योदय के बाद हल्की बूंदबांदी हुई, किन्तु वह कुछ ही समय में रुक गई, इस कारण परमाराध्य आचार्यप्रवर के विहार प्रारम्भ करने में विलम्ब नहीं हुआ। आज के विहार पथ के प्रारम्भिक करीब सात कि.मी. का भाग काफी क्षतिग्रस्त-सा बना हुआ था। सड़क संकरी होने के साथ टूटी हुई भी थी। कहीं-कहीं पत्थरों के ढेर लगे हुए थे। पूज्यप्रवर इस विषम मार्ग पर भी अविराम बढ़ते जा रहे थे। वर्षा होने के कारण विहार पथ के आसपास की मिट्टी जम गई, इस कारण वातावरण रजकणों से कुछ मुक्त रहा। मार्ग के आसपास दृष्टिगोचर हो रही विशाल पवनचक्कियां हवा के वेग के अभाव में रुकी हुई थीं।

पूज्यप्रवर थेरला गांव में पधारे। गांव के सरपंच श्री चन्द्रकांत राक (बाला साहब) आदि ने पूज्यप्रवर का श्रद्धासिक्त स्वागत किया। आचार्यप्रवर सरपंचजी के निवेदन पर उनके घर में पधारे। आचार्यप्रवर का आज का प्रवास यहीं रखा गया था। बाद में उसमें परिवर्तन किया गया और साध्वीवृंद का प्रवास सरपंचजी के निवास स्थान में रखा गया। पूज्यप्रवर के स्वागत में मार्ग के समीप कतारबद्ध और करबद्ध खड़ी ग्राम्य महिलाएं 'जय जय ज्योतिचरण, जय जय महाश्रमण' के लयबद्ध घोष के माध्यम से श्रीचरणों में अपनी अभ्यर्थना अर्पित कर रही थीं। पूज्यप्रवर करीब ११.२ कि.मी. का विहार सम्पन्न कर थेरला में स्थित जिला परिषद माध्यमिक शाला में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

परम पावन आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत अपने मंगल प्रवचन में 'पन्नगे च सुरेन्द्रे च...' श्लोक को व्याख्यायित करते हुए प्रभु महावीर के जीवन प्रसंगों को भी प्रस्तुत किया।

थेरला के सरपंच श्री बाला साहब राखव ने कहा- 'परम पूज्य आचार्यश्री महाश्रमणजी महाराज आज हमारे गांव में पधारे हैं। यह हमारे गांव का सौभाग्य है। मैं अपने गांव की ओर से आपका बहुत-बहुत स्वागत करता हूं। मानव कल्याण के लिए निकली इस पदयात्रा के साथ आप बार-बार हमारे गांव में पधारते रहें, मैं ऐसी प्रार्थना करता हूं।'

जिला परिषद माध्यमिक शाला के प्रिंसिपल श्री प्रताप काले ने कहा- 'जब-जब सृष्टि से मानवता समाप्त होती है, तब मानवीय चेतना को जागने के लिए आचार्यश्री महाश्रमणजी जैसे संतों-महात्माओं का शुभागमन होता है। मानवीय कल्याण के लिए आपने पचपन हजार किलोमीटर से ज्यादा पदयात्रा कर ली है। आपके चरण वंदनीय हैं। आज आपके पूज्यचरण हमारे विद्यालय में पड़ने से यहां की धरती पावन हो गई है और यह विद्यालय मंदिर के समान हो गया है। मैं समस्त विद्यार्थी, शिक्षकगण आदि की ओर से आपका बहुत-बहुत स्वागत एवं अभिनंदन करता हूं।'

पूज्यप्रवर के पदार्पण से थेरला गांव का माहौल अलौकिक रूप धारण किए हुए था। स्थानीय लोग पृथक्-पृथक् समूहों में यदा-कदा आचार्यप्रवर के दर्शनार्थ पहुंचते जा रहे थे। उत्सुकता के साथ आने वाले लोग भी पूज्यप्रवर के दर्शन करने के बाद मन में श्रद्धा भाव लिए लौट रहे थे।

नायगांव मयूर अभयारण्य के परिपार्श्व में

२५ अप्रेल। परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने प्रातः थेरला से पिट्ठी के लिए प्रस्थान किया। आसमान पर छाए हुए बादल और मंद-मंद बहती हुई हवा वातावरण को सुहाना रूप प्रदान किए हुए थे। थेरला का एक वृद्ध दंपति पूज्यप्रवर के दर्शनार्थ अपने घर के बाहर आया। वयोवृद्ध व्यक्ति ने पूज्यप्रवर को भेंट करने की भावना से जेब से रुपए निकाले। आसपास चल रहे लोगों ने उसे रोका। पूज्यप्रवर ने उसे पावन आशीर्वाद प्रदान किया। आज कई दिनों बाद सड़क अच्छी और कम ट्रैफिक वाली रही। विहार पथ के समीप स्थापित विशाल सोलर प्लांट पूज्यप्रवर की दृष्टि का विषय बना। दूर-दूर तक लगी सोलार प्लेट्स विस्तीर्ण पानी का-सा अहसास करा रही थी।

नायगांव मयूर अभयारण्य के मध्य बने विहार मार्ग का कुछ हिस्सा घाट के रूप में था, जो ज्यादा अवरोहण लिए हुए था। इस अभयारण्य में विहरण कर रहे मयूर जाति के प्राणी और उनकी मधुर आवाज राहगीरों का ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे। बताया गया कि इस अभयारण्य में बिबट (तेंदुआ) भी हैं, जो यदा-कदा ग्रामीणों व जन्तुओं को अपना शिकार बनाते हैं।

विहार पथ से करीब दो कि.मी. दूर स्थित निरगुडी के जैन समाज के लोगों ने विहार के दौरान आचार्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। पूज्यप्रवर के स्वागत में नायगांव के लोग भी अच्छी संख्या में उपस्थित थे। स्थानीय महिलाएं 'जय जय ज्योतिचरण, जय जय महाश्रमण' की लयबद्ध ध्वनि से पूज्यप्रवर की अभिवंदना कर रही थीं। पूज्यप्रवर करीब ११.४ कि.मी. का विहार कर पिट्ठी में स्थित आंगनबाड़ी केन्द्र में पधारे। आज सायं तक का प्रवास यहीं हुआ।

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के दौरान अपने पावन प्रवचन में पाप कार्यों से बचने व धर्माचरण की प्रेरणा प्रदान की।

पिट्ठी के सरपंच डॉ. कवठेकर ने कहा- 'स्व व परकल्याण के लिए तथा विश्व में सुख-शांति लाने के लिए पचपन हजार से अधिक की पदयात्रा करने वाले आचार्यश्री महाश्रमणजी आज हमारे गांव में पधारे हैं। मैं समस्त जनता की ओर से आपका दिल से स्वागत करता हूं। हम सभी का सौभाग्य है कि हम सभी को आपके दर्शन करने व प्रवचन सुनने का अवसर प्राप्त हुआ। आपने अपने अमूल्य प्रवचन में हम सभी को जो ज्ञान का दान दिया है, वह हमारे जीवन का कल्याण करने वाला होगा।'

आज दिन में ग्रामीण लोग बड़ी संख्या में आचार्यप्रवर के दर्शन व पावन आशीर्वाद से लाभान्वित हुए। संतों की भूमि महाराष्ट्र में साधु-संतों के प्रति सहज भक्ति भाव दिखाई देता है।

सायंकाल परम पूज्य आचार्यप्रवर पिट्ठी से उखंडा की ओर प्रस्थित हुए। नायगांव के ग्राम्यजनों ने पूज्यप्रवर को वंदन कर श्रीचरणों में अपने मंगल भाव समर्पित किए। पूज्यप्रवर ने उन्हें शुभाशीर्वाद प्रदान किया। पूज्यप्रवर करीब ३.३ कि.मी. का विहार कर उखंडा में स्थित जिला परिषद प्राथमिक शाला में पधारे। आज का रात्रिकालीन प्रवास यहीं हुआ।

आज रात्रि में भारतीय जनता पार्टी के बीड़ जिलाध्यक्ष श्री राजेन्द्र म्हस्के ने पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया।

आराध्य के प्रथम आगमन और एकदिवसीय प्रवास की वृद्धि से आह्लादित बीडवासी

२६ अप्रेल। परमाराध्य आचार्यप्रवर प्रातः उखंडा से बीड़ के लिए प्रस्थित हुए। वरहाटा के ग्रामीणों ने विहार के दौरान पूज्यप्रवर के दर्शन कर पावन आशीर्वाद प्राप्त किया। इसी प्रकार ग्वालवाडी के ग्राम्यजन आचार्यप्रवर के दर्शन व शुभाशीर्वाद से लाभान्वित बने। ग्वालवाडी का एक परिवार दूध तथा फल लेकर आया और पूज्यप्रवर से उन्हें लेने की प्रार्थना की। पूज्यप्रवर ने उस परिवार के निकट अपने चरण थाम कर उसे पावन आशीर्वाद प्रदान किया।

निर्धारित कार्यक्रमानुसार पूज्यप्रवर का बीड में पदार्पण आगामी कल के लिए निर्धारित था, किन्तु बीडवासियों की पुरजोर प्रार्थना पर आचार्यप्रवर ने आज का प्रवास भी बीड में करना स्वीकार किया। इस हेतु गत कल सायंकाल भी विहार किया गया और आज का विहार भी कुछ लम्बा अर्थात् चौदह कि.मी. रखा गया। भीषण गर्मी में भी पूज्यप्रवर भक्तों की भावना को परितृप्ति प्रदान करने के लिए गतिमान थे। तेरापंथ धर्मसंघ के किसी भी आचार्यप्रवर के प्रथम पदार्पण का प्रसंग बीड के श्रद्धालुओं को अतिशय उत्फुल्ल बनाए हुए था। स्थानीय लोग बड़ी संख्या में पूज्यप्रवर की अगवानी में उपस्थित हो रहे थे। लोगों का उत्साह उनकी प्रसन्न भावभंगिमा व आसपास के वातावरण में दृष्टिगोचर हो रहा था। पूज्यप्रवर करीब १४.१ कि.मी. का विहार कर बीड में स्थित श्री चंपावती प्राथमिक शाला में पधारे। आज का प्रवास यहीं हुआ।

मुख्य प्रवचन कार्यक्रम के अंतर्गत परमाराध्य आचार्यप्रवर ने अपने मंगल प्रवचन में भोग संयम और योग साधना के विकास की प्रेरणा प्रदान की।

कार्यक्रम में उपासक श्री सुभाष समदड़िया ने अपनी आस्थासिक्त अभिव्यक्ति दी। स्थानीय तेरापंथ महिला मण्डल ने स्वागत गीत का संगान किया।

आचार्य श्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव : पूज्यचरणों में अर्पित करें आध्यात्मिक उपहार

युगप्रधान, महातपस्वी, परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी एक सिद्ध योगी और जनकल्याणकारी महापुरुष हैं। स्व परकल्याण के लिए समर्पित ऐसे परम पवित्र महान गुरुवर के दीक्षा का पचासवां वर्ष 'आचार्य श्री महाश्रमण दीक्षा कल्याण महोत्सव' के रूप में मनाया जा रहा है। आगामी २२ मई २०२४ को आचार्य श्री महाश्रमणजी के दीक्षा के पचास वर्षों की संपन्नता के साथ ही यह वर्ष भी सुसंपन्न होगा। यह भी शुभ संयोग है कि १७ मई को परम पूज्य आचार्यप्रवर का जन्म दिवस तथा १८ मई को आचार्य पदारोहण दिवस भी है। इस दृष्टि से समापन समारोह छह दिवसीय अर्थात १७ मई से २२ मई तक रखा गया है। हम सभी ऐसे आध्यात्मिक महापुरुष व महान उपकारी गुरुवर को अभिवंदना स्वरूप आध्यात्मिक उपहार अर्पित करें, इस दृष्टि से छह दिनों के छह संकल्प निर्धारित किए गए हैं।

कोई भी व्यक्ति अपनी सुविधा व इच्छा के अनुसार सभी संकल्प अथवा इनमें से एक अथवा एकाधिक संकल्प स्वीकार कर सकता है। चारित्रात्माएं और समणीवृन्द भी इस हेतु श्रावक-श्राविकाओं को प्रेरित करें, ऐसी अपेक्षा है।

निर्धारित संकल्प इस प्रकार हैं-

- मैं १७ मई २०२४ को गुस्सा व अपशब्द का प्रयोग नहीं करूंगा। यदि इसमें प्रमाद हुआ तो संबंधित व्यक्ति से एक घंटे के भीतर क्षमायाचना करूंगा तथा अगले दिन नमक का त्याग रखूंगा/रखूंगी।
- मैं १८ मई २०२४ को निरंतर तीन घंटे पंखा, ए.सी. व कूलर का उपयोग नहीं करूंगा/करूंगी।
- मैं १९ मई २०२४ को प्रातः ०९:०० से १०:०० बजे के बीच सामायिक करूंगा/करूंगी।
- मैं २० मई २०२४ को सायं ०७:०० से ०८:०० बजे तक मौन का प्रयोग करूंगा/करूंगी।
- मैं २१ मई २०२४ को चीनी व चीनी से बनी चीजों का सेवन नहीं करूंगा/करूंगी।
- मैं २२ मई २०२४ के सूर्यास्त से २३ मई २०२४ के सूर्योदय तक पानी व अति आवश्यक दवाई के सिवाय कुछ भी ग्रहण नहीं करूंगा/करूंगी।

संकल्प पत्र भरने के लिए क्यू.आर. कोड स्केन करें।

विज्ञप्ति के संदर्भ में पत्र व्यवहार का पता एवं संपर्क सूत्र

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा, 3 पोर्चुगीज चर्च स्ट्रीट, कोलकाता 700001

मो.नं. - 7044778888 Email : vigyapti@terapanthinfo.com

ऑनलाइन विज्ञप्ति Terapanth मोबाईल एप तथा www.terapanthinfo.com पर उपलब्ध

Date of Publication : 06-05-2024

(Page 1-8)

3-9 May 2024

विज्ञप्ति

Postal Reg. No. DL(C) -01/1243/2024-26 Wed.-Thu.

L.No.-U(C)-200/2024-26

Licence to Post without Pre-payment

Regd. No. 61758/95 Office of Posting Delhi PSO Delhi-6

जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक- संजय खटेड़ द्वारा प्रिंट मास्टर इन्टरप्राइजेज, एल.एल.पी-६३ जी.एफ.पटपड़गंज इंडस्ट्रियल एरिया, दिल्ली से मुद्रित तथा अणुव्रत भवन, 210 दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली- 110002 से प्रकाशित। सम्पादक : छगनसिंह सांखला